गायत्री परिवार ट्रस्ट (गायत्री शक्ति पीठ, विज्ञान नगर) कोटा, राजस्थान (17 से 20 फरवरी, 2020) के कार्यक्रम में भाषण

---

17 से 20 फरवरी, 2020

कोटा, राजस्थान

सबसे पहले, मैं इस शुभ अवसर पर आप सभी के बीच आकर हर्ष का अनुभव कर रहा हूं।

शान्तिकुंज, हरिद्वार के तत्वावधान में कार्य कर रहे गायत्री परिवार ट्रस्ट, कोटा के आयोजकों का आभारी हूं कि उन्होंने बागर, डूंगरपुर, राजस्थान स्थित श्रीराम गुरूकुलम के भूमि पूजन और पवित्र 108 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ पर मुझे आमन्त्रित किया।

हम सभी जानते हैं कि गायत्री शक्तिपीठ सागवाडा वर्षों से गायत्री परिवार के "गृहे-गृहे गायत्री यज्ञ" के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिये प्रयासरत है। वे इस संबंध में बहुत से कार्य कर रहे हैं और उन्होंने हज़ारों परिवारों के घरों में गायत्री को माता रूप में और यज्ञ को पिता रूप में स्थापित करने का प्रयास किया है। अब समय आ गया है कि 108 कुण्डलीय महायज्ञ कार्यक्रम का आयोजन करके इन कार्यों को पूर्णता प्रदान की जाये।

मित्रो, आप सभी जानते हैं कि हमारे देश की एक प्राचीन और समृद्ध सांस्कृतिक विरासत है। यह वैदिक संस्कृति की भूमि है और युगों से ऋषियों और महात्माओं ने सभी जातियों, सम्प्रदायों और धर्मों के लोगों में भाईचारे और एकजुटता के विचार और भावनाओं का प्रचार-प्रसार और विकास किया है।

यही कारण है कि हम "वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना में विश्वास करते हैं और गायत्री परिवार ऐसे समाज के मॉडल को साकार कर रहा है जिसमें केवल प्रेम, सद्भाव, सौहार्द एवं उस परमात्मा पर अटूट विश्वास की बात कही गई है।

देवियो और सज्जनो, मैं आप लोगों को बताना चाहूंगा कि गायत्री परिवार इस दर्शन में विश्वास रखता है कि मनुष्य अपनी नियति का स्वयं निर्माण करता है, और ऐसा वह, साधना, स्वाध्याय, संयम और सेवा के माध्यम से कर पाता है। इसे लोगों को जीवन शैली के रूप में अपनाना चाहिए।

गायत्री ईश्वर की, विवेक की, शक्ति की मूर्त रूप है। उनकी उपासना में निहित तत्व और उसके अर्थ को समझ लेने से दूरदर्शी ज्ञान की प्राप्ति होती है।

एकमात्र यही एक पर्याप्त प्रोत्साहन है, जिससे कोई व्यक्ति सदाचारी जीवन जीने और भौतिक दुख, शोक, कष्ट और यातना से सहज मुक्ति पाने की ओर अग्रसर हो सकता है। गायत्री मंत्र अर्थात्:

"ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं।

भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्॥"

के उच्चारण से पूर्ण संतोष का भाव आता है और इस पवित्र मंत्र में सम्पूर्ण जीवन दर्शन समाहित है।

गायत्री शक्ति पीठ के शक्तिपुंज युग-ऋषि पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य हैं, जो एक महात्मा, सुधारक, लेखक, दार्शनिक, आध्यात्मिक गुरू और दूरद्रष्टा थे। उन्होंने शक्तिपीठ की स्थापना लोगों और व्यापक रूप से समाज के परिवर्तन के लिये एक मिशन और जन आंदोलन के रूप में की।

आचार्य श्री का सम्पूर्ण जीवन भगीरथ जैसी तपस्या के लिये समर्पित था, जिसका लक्ष्य सार्वभौमिक शान्ति, समरसता और सद्भाव के एक नये युग के आगमन के लिए मार्ग प्रशस्त करना था, जिसे धरती पर स्वर्ग के अवतरण के युग से जोड़ा जा सकता है।

पन्द्रह वर्ष की अल्पायु में ही उन्होंने 24 लाख महापुरश्चरणों का प्रयास किया और आध्यात्मिक साधनों के माध्यम से लोगों और समाज के सामाजिक और नैतिक उत्थान के कार्य में लग गये।

वास्तव में, समाज के प्रति उनका योगदान आत्मनिरीक्षण, आत्म-शुद्धि, आत्म-विकास और आत्मानुभूति की प्रक्रिया के माध्यम से आत्मा के उत्थान की व्यवस्था करना है। समझदारी, ईमानदारी, जिम्मेदारी और साहस जैसे सदगुण अत्यंत स्वाभाविक गुण हैं, जो सभी में होने चाहिये।

उनके उपदेशों का भारत और विदेश में लाखों लोग इस तरह अनुसरण करते हैं मानो वे युग-ऋषि के संदेशों के आलोक में अपने और पूरे समाज के जीवन में परिवर्तन लाने का प्रयास कर रहे हों।

आचार्य जी ने स्वेच्छा से गायत्री जयन्ती दिवस अर्थात् 2 जून, 1990 को इस संसार को त्याग दिया, किंतु इस नश्वर संसार से देह त्याग के बावजूद मिशन का विश्व भर में विस्तार हुआ और उनके द्वारा आरंभ किये गये कार्य को आगे बढ़ाने के लिये 41 अश्वमेध यज्ञ (32 भारत और 9 विदेश में, जिसमें यू.के., यू.एस.ए., कनाडा, आस्ट्रेलिया और दक्षिण अफ्रीका शामिल हैं) किये गये।

मित्रो, यह मेरे लिये अत्यंत गर्व ओर संतोष की बात है कि अखिल विश्व गायत्री परिवार, शान्तिकुंज, हरिद्वार के तत्वावधान में गायत्री शक्ति पीठ, सागवाड़ा, राजस्थान के एक जनजाति बहुल क्षेत्र, बागर क्षेत्र के लोगों के जीवन के उत्थान के प्रति कृत संकल्प होकर कार्य कर रहा है।

जनजातीय लोग प्रकृति और पर्यावरण के बहुत निकट हैं। आधुनिकता के इस युग में यह संभव है कि वे अपने देश में अलग-थलग महसूस करते हों। हालांकि हमारी सरकार विभिन्न नीतियों, स्कीमों, योजनाओं और कार्यक्रमों के माध्यम से जनजातीय लोगों को हमारे समाज की मुख्यधारा से जोड़ने के लिये लगातार कार्य कर रही है परन्तु इस संबंध में गायत्री परिवार के सदस्यों का योगदान सराहनीय है।

वे प्रत्येक समुदाय और धर्म के लोगों से सम्पर्क करते हैं और उनके बीच आध्यात्मिक, शैक्षणिक और सांस्कृतिक कार्यक्रमों की मदद से भारतीय संस्कृति, पर्यावरण, स्वास्थ्य और शिक्षा जैसे जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में जागरूकता फैलाते हैं।

मित्रो, हम सभी परिचित है कि शिक्षा के माध्यम से या किसी समाज और राष्ट्र के जीवन में अप्रत्याशित परिवर्तन लाने का सर्वोत्तम माध्यम है। ज्ञान के उस छिपे हुए स्रोत को प्रकाश में लाने का कार्य शिक्षा करती है। यह अज्ञानता के अंधकार को ज्ञान के प्रकाश से आलोकित करने का माध्यम है।

मुझे खुशी है कि यहां गायत्री शक्तिपीठ में “श्री राम गुरुकुलम् भवन” की आधारशिला रखने का मुझे शुभ अवसर मिल रहा है। यह अपनी तरह का पहला विद्यालय है और यह बिना किसी भेदभाव के समाज के जरूरतमंद छात्रों की आवश्यकताओं को पूरा करेगा। गायत्री शक्ति पीठ सागवाडा के इस आवासीय विद्यालय के परिसर में 200

कमरे होंगे, जो छात्रों को सभी मूलभूत सुविधाएं जैसे रहना, भोजन, लाइब्रेरी और खेल-कूद की सुविधाएं इत्यादि प्रदान करेगा।

इसके अतिरिक्त, छात्रों को भारतीय धर्म, अध्यात्म, दर्शन, मानवता, संस्कृति, प्रकृति और साथ ही पर्यावरण के बारे में शिक्षा दी जायेगी। इसके साथ ही, उन्हें भविष्य के लिये व्यावसायिक शिक्षा, कॅरियर संबंधी मार्गदर्शन भी प्रदान किया जायेगा।

आज के आधुनिक विश्व में विद्यार्थी प्राय: अपने लक्ष्य से भटक जाते हैं, अत: श्री राम गुरूकुलम् और गायत्री परिवार के समर्पित सदस्य छात्रों का ध्यान अपने लक्ष्य के प्रति केन्द्रित रखने और इस देश का जिम्मेदार नागरिक बनाने के प्रति दृढ़ संकल्पित हैं। इस प्रकार गायत्री परिवार के प्रवर्तक आचार्य श्री राम शर्मा का स्वप्न पूरा होगा।

मेरे विचार से, किसी भी समाज के समुचित विकास के लिये किसी भी धर्म, जाति, सम्प्रदाय, आदि से ऊपर उठकर सभी की भागीदारिता की आवश्यकता होती है। यह जिम्मेदारी केवल सरकार की ही नहीं होती, अपितु गैर-सरकारी संगठनों और धार्मिक संगठनों को भी आगे बढ़कर प्रयास करने चाहिये और इस दिशा में गायत्री परिवार के कार्य निस्सन्देह सराहनीय हैं।

मुझे विश्वास है कि ऐसे कार्य इस मिशन के पूर्णाहुति यज्ञ के बाद भी नहीं रूकेंगे बल्कि हमारे देश की जनता को शामिल करके ऐसी समाज सेवा के एक नये मिशन की शुरूआत होगी।

मैं इस 108 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ के आयोजकों और 'श्रीराम गुरूकुलम' को तथा समाज सेवा में उनके भावी कार्यकलापों के लिये शुभकामनाएं देता हूं, जिनका उद्देश्य एक ऐसे राष्ट्र और समाज का निर्माण करना है, जहां शान्ति, प्रेम, आपसी भाईचारा और समानता होगी।